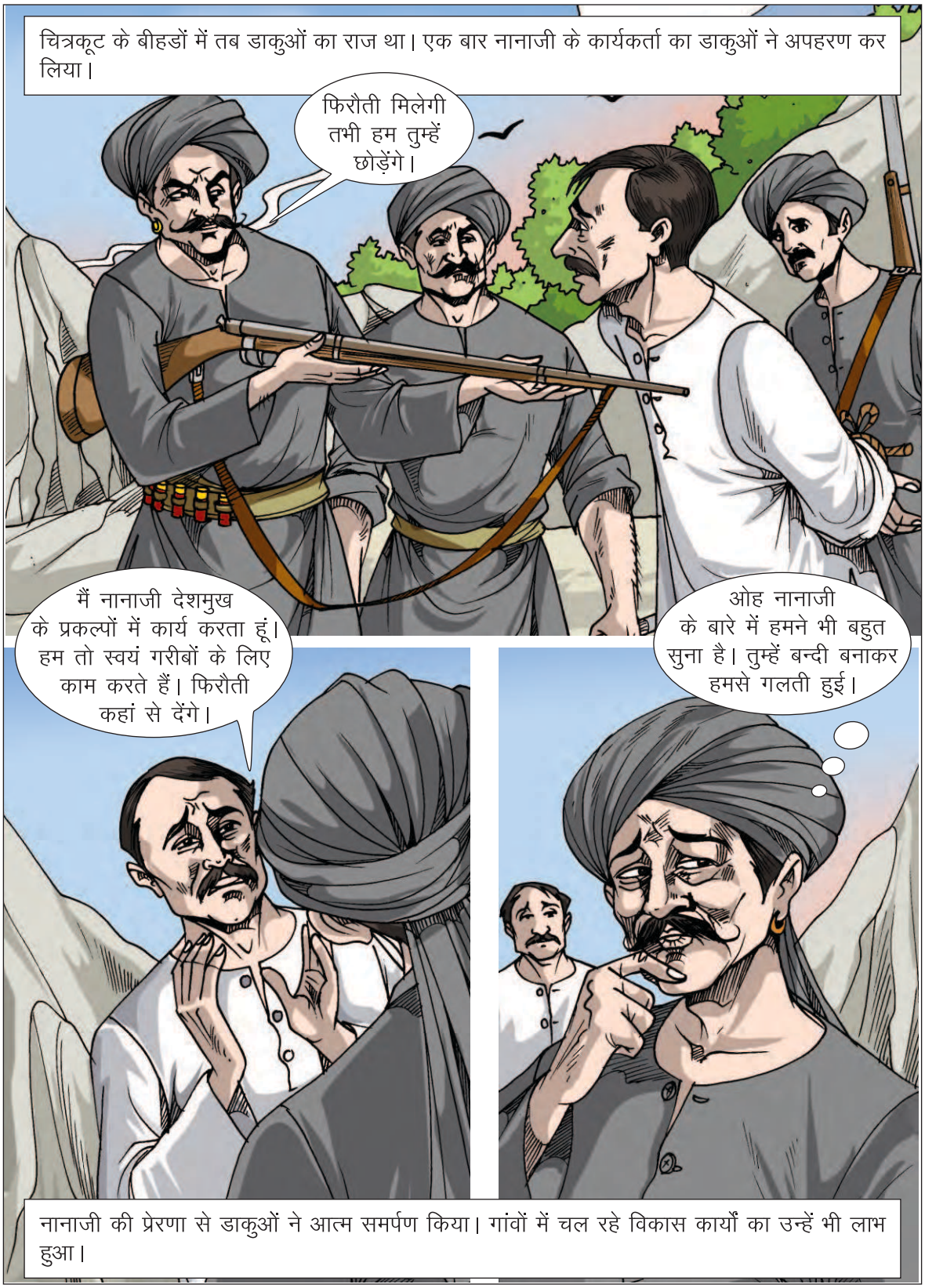
चित्रकूट के बीहडों में तब डाकुओं का राज था। एक बार नानाजी के कार्यकर्ता का डाकुओं ने अपहरण कर लिया।
फिरौती मिलेगी तभी हम तुम्हें छोड़ेंगे।
मैं नानाजी देशमुख के प्रकल्पों में कार्य करता हूं। हम तो स्वयं गरीबों के लिए काम करते हैं। फिरौती कहां से देंगे।
ओह नानाजी के बारे में हमने भी बहुत सुना है। तुम्हें बन्दी बनाकर हमसे गलती हुई।
नानाजी की प्रेरणा से डाकुओं ने आत्म समर्पण किया। गांवों में चल रहे विकास कार्यों का उन्हें भी लाभ हुआ।